Dept of Political Science

Course material for II Hons (Hindi Medium)

IV Semester

Paper: Political Institutions and Processes in Comparative Perspective

Chapter Title: Democratization

References:

1. Newton, Kenneth and Vandeth, Jan W., Democratic Change and Persistence in Foundations of Comparative Politics, New York, Cambridge Univ. Press, 2005

2. Diamond, Larry, The Spirit of democracy, The Struggle to Build Free Societies Throughout the World, Holt, NEW York, 2009

3. Landman, Todd, Transitions to Democracy, in Issues and Methods in Comparative Politics: An Introduction, London, Routledge, 2003.

Submitted by: Dr. Chandrika Gulati

लोकतान्त्रिकरण

तुलनात्मक राजनीतिक साहित्य में लोकतंत्र तथा लोकतांत्रिकरण बहुत महत्वपूर्ण विषय हैं। विश्व में साम्यवाद के अंत के बाद लोकतांत्रिक उदारवाद वैश्विक विचारधारा बन गई। फ्रांसिस फुकुयामा ने विचारधारा का अन्त 'end of ideology' कहा। इस अध्याय में आप जानेंगे:
लोकतंत्र क्या है? लोकतांत्रिक परिवर्तन क्या है? लोकतांत्रिकरण की लहरें क्या हैं? लोकतांत्रिक अपूर्णताएं किस प्रकार कुछ राज्यों को आंशिक लोकतंत्र बनाती हैं जबकि लोकतांत्रिक दृढ़िकरण (consolidation) कुछ राज्यों को लोकतांत्रिक अंत:स्थापित व्यवस्था बनाता है।

लोकतन्त्र: दो प्रकार से समझा जा सकता है। पहला राबर्ट डाल तथा शोम्पीटर द्वारा प्रस्तुत प्रक्रियात्मक या न्यूनतम लोकतन्त्र। दूसरा, मर्कल का वास्तविक या सघन, अधिकतम लोकतन्त्र। प्रक्रियात्मक लोकतंत्र का सम्बन्ध निर्वाचन, वयस्क मताधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और बहुलवाद से है। वास्तविक लोकतन्त्र का सम्बन्ध स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के साथ साथ अन्य नागरिक स्वतंत्रताओं, संवैधानिक शासन, नागरी समाज (civil society) जो व्यक्ति को शासन की स्वेच्छाचारिता से बचाता है। लोरी डायमण्ड इन सबके साथ सामाजिक, आर्थिक न्याय को भी लोकतन्त्र की वास्तविक परिभाषा में स्थान देता है। इन दोनों आधारों पर विश्व की लगभग 60% आबादी लोकतांत्रिक देशों में निवास करती है।

लोकतांत्रिकरण : न्यूटन व डेच के अनुसार,

एक राजनीतिक व्यवस्था का अधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की ओर संक्रमण लोकतांत्रिकरण कहलाता है। दुनिया के सभी देश लोकतांत्रिक नहीं हैं। कुछ दीर्घ काल से लोकतांत्रिक हैं तो कुछ सत्तावादी। कहीं लोकतंत्र को पलट दिया गया तो कहीं लोकतंत्र की ओर यात्रा जारी है। संक्षेप में कम लोकतांत्रिक से अधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की या सत्तावादी (authoritarian) से लोकतंत्र की ओर जाने की प्रक्रिया और परिवर्तन लोकतांत्रिकरण है।

लोकतांत्रिकरण एक विशेष प्रकार का परिवर्तन है तो लोकतांत्रिक दृढ़िकरण का सम्बन्ध उन दशाओं के निर्माण से है जो लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को स्थायित्व प्रदान करती हैं। बस लोकतंत्र ही है, 'democracy is the only game in town'. अर्थात् लोकतांत्रिकरण दृढ़िकरण लोकतांत्रिकरण का परिणाम कहा जा सकता है। चुनावी प्रतिस्पर्द्धा और उसके परिणाम को स्वीकारना, स्वतंत्र न्यायपालिका, नागरी समाज और जनता को लोकतंत्र में आस्था, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा इसकी ओर संकेत करते हैं।

लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया और पूर्वशर्तें

विभिन्न देशों में विभिन्न होती है। सदियों के क्रमिक परिवर्तन से यूनाइटेड किंगडम में 1689 में निरंकुश राजतंत्र का स्थान संवैधानिक लोकतन्त्र ने लिया। अमेरिका व फ्रांस में लम्बे संघर्ष व क्रांति के उपरान्त 1776 व 1789 में क्रमशः लोकतन्त्र की स्थापना हुई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने कनाडा, न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया और अन्य देशों में लोकतंत्र के बीज बोए। 1974 में पुर्तगाल में तानाशाही की समाप्ति के बाद लोकतंत्र आया। फिर स्पेन (1975), ब्राज़ील (1985) और चिले (1989) में लोकतन्त्र आया। 1990-91 में सोवियत संघ के

पतन के बाद पूर्वी और मध्य यूरोप में लोकतंत्र आया।

<u>लोकतांत्रिकरण के कारक</u>

1. <u>निर्भरता सिद्धान्त</u> : समीर अमीन और ए.जी. फ्रैंक मानते हैं कि निर्धनता और विश्व के विकसित देशों पर निर्भरता और उनके द्वारा शोषण के होते हुए विकासशील देशों में लोकतांत्रिकरण ~~स्थापना~~ की प्रक्रिया कठिन है। हालांकि आर्थिक स्वायत्तता के होते हुए भी चीन और उत्तरी कोरिया लोकतांत्रिकरण से दूर हैं। निर्भरता सिद्धान्तवादी अब मानते हैं कि जब तक निर्धन आर्थिक रूप से सशक्त होकर राजनीतिक प्रक्रिया में भाग नहीं लेते, लोकतंत्र प्रक्रियात्मक ही रहेगा।

2. विकासवादी सिद्धान्तवादी जैसे स्टीन रोकॉं मानते हैं कि लोकतांत्रिकरण के पीछे लोगों की बेहतर परिस्थितियों का हाथ है। आर्थिक खुशहाली से शिक्षा और सूचना का स्तर बढ़ता है, जनता की राजनीतिक में भागीदारी और सहमति बढ़ती है।

3. आधुनिकीकरण सिद्धान्त के अनुसार आर्थिक व तकनीकी परिवर्तन, औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, सामाजिक व भौगोलिक गतिशीलता, मध्यम वर्ग का विस्तार उदारवादी लोकतंत्र की मांग बढ़ाते हैं। परम्परागत से आधुनिकता में परिवर्तन, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वायत्तता सत्तावादी व्यवस्था को चुनौती देते हैं। आर्थिक के साथ साथ आधुनिकीकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक संस्कृति में परिवर्तन लोकतांत्रिकरण को स्पष्ट करते हैं, लेकिन अमेरिका में लोकतन्त्र के उलटने से इस सिद्धान्त को धक्का लगा।

संस्थागत सिद्धान्त : संस्थाओं पर बल देता है। निर्वाचन व्यवस्था, स्वतन्त्र न्यायपालिका, संसदीय व्यवस्था इत्यादि लोकतांत्रिकरण को बढ़ावा देते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कारक - विदेशी ताकतों द्वारा प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप, आर्थिक व सैन्य सहायता अनेक देशों में लोकतांत्रिक संक्रमण का कारण बनी है।

लोकतांत्रिक लहर : सैम्युअल हटिंगटन ने 35 एशियाई और लैटिन अमेरिकी देशों का अध्ययन किया। उनके विचार में लोकतांत्रिकरण की प्रक्रिया सीधी सपाट उत्तरोत्तर वृद्धि की लकीर के रूप में नहीं है। बल्कि समुद्र की लहरों के उतार-चढ़ाव की तरह लोकतंत्र की स्थापना, अंत, वापसी की कहानी है। लहर इसलिए क्योंकि कुछ देशों के समूह एक साथ लोकतांत्रिक हुए और कुछ समय बाद उनमें से कुछ में लोकतंत्र उलट दिया गया।

पहली लहर - 1828 से 1926 के बीच अमेरिका और यूरोप में मताधिकार के विस्तार और अन्य कारकों से लोकतांत्रिकरण हुआ। इस लहर में दुनिया के 45 देश लोकतांत्रिक हुए। हिटलर और मुसोलिनी के प्रभाव में इस लहर के अंत में 12 देश लोकतांत्रिक रह गए।

द्वितीय लहर – द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त के आस पास जापान, पश्चिम जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया में लोकतन्त्र स्थापित हुए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अन्त के साथ पूर्ववर्ती उपनिवेशों जैसे भारत, पाकिस्तान आदि में लोकतांत्रिक व्यवस्था बनी। 1960 की दशक आते आते जो 36 देश इस लहर में लोकतंत्रिक हुए थे, उनमें से बहुतों में लोकतांत्रिक व्यवस्था चरमराने लगी।

तृतीय लहर : पुर्तगाल में 1974 में तानाशाह सालाज़ार के अंत से शुरु हुई। 1974 से 1989 के बीच स्पेन, मैक्सिको, चिले, फिलीपिन्स, दक्षिणी कोरिया, पोलैन्ड, हंगरी लोकतांत्रिक हो गए।

ऐसा माना जाता है कि चौथी लहर 1989-2000 के बीच शीत युद्ध के अंत, बर्लिन दीवार के ढ़हने, सोवियत संघ के अंत से आई। तमाम पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ से निकले राज्य लोकतांत्रिक हो गए। बाद में इस क्षेत्र में लोकतंत्र को कई झटके लगे।

हटिंगटन के विचार में तृतीय लहर के आने के कई कारण थे। हटिंगटन संक्रमण क्षेत्र की की बात करता है। जब एक राज्य आर्थिक विकास प्राप्त करता है तो लोकतांत्रिक व्यवस्था प्राप्त करने से पूर्व संक्रमण क्षेत्र में प्रवेश करता है। अब यहाँ से कोई राज्य लोकतांत्रिक हो पाता है, यह चार तत्वों पर निर्भर करता है।

1. राजनीतिक विशिष्ट वर्ग क्या चुनते हैं लोकतांत्रिक या अलोकतांत्रिक व्यवस्था।
2. नागरी समाज का दबाव, आर्थिक विकास, मध्य वर्ग की उदय इत्यादि। परन्तु आर्थिक विकास की स्थिति में भी बहुत जगह लोकतंत्र नहीं, जबकि अनेक अल्पविकसित और विकासशील देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था सुदृढ़ है।
3. बाहरी तत्वों का दबाव
4. सांस्कृतिक तत्व जैसे धर्म की भूमिका - जहाँ ईसाई धर्म प्रधान है वहाँ लोकतन्त्र है, जहां इस्लाम प्रमुख है, लोकतंत्र का अभाव है।

हटिंगटन प्रदर्शन प्रभाव या snowballing effect की बात करता है, अन्य देशों के प्रभाव में लोकतांत्रिक परिवर्तन

लोकतांत्रिक पैमाना Measuring democracy

अंत:स्थापित लोकतंत्र - प्रभावशाली शासन वे वास्तविक लोकतंत्र - Embedded democracy

त्रुटिपूर्ण लोकतंत्र - Defective democracy - जहाँ अंतस्थापित लोकतंत्र के सब तत्व न हों

आंशिक लोकतन्त्र - Partial democracy जहाँ सबको लोकतांत्रिक अधिकार न हो

अपूर्ण लोकतंत्र - guarded democracy जहाँ धार्मिक, सैन्य व अन्य तत्व सत्ता पर हावी हो

अनुदार लोकतंत्र - Illiberal democracy - सरकार सत्ता चुनाव से हासिल करती है पर चुनाव के उपरान्त सरकार स्वेच्छाचारी हो जाती है, संवैधानिक प्रथाओं पर प्रहार होता है, विधानपालिकाएं क्षीण होती है, राष्ट्रपति अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त कर लेते हैं।